समकालीन भारत और शिक्षा

Kalindi Prakashan

डॉ०भावना सिंह
डॉ०अमित कुमार दूबे

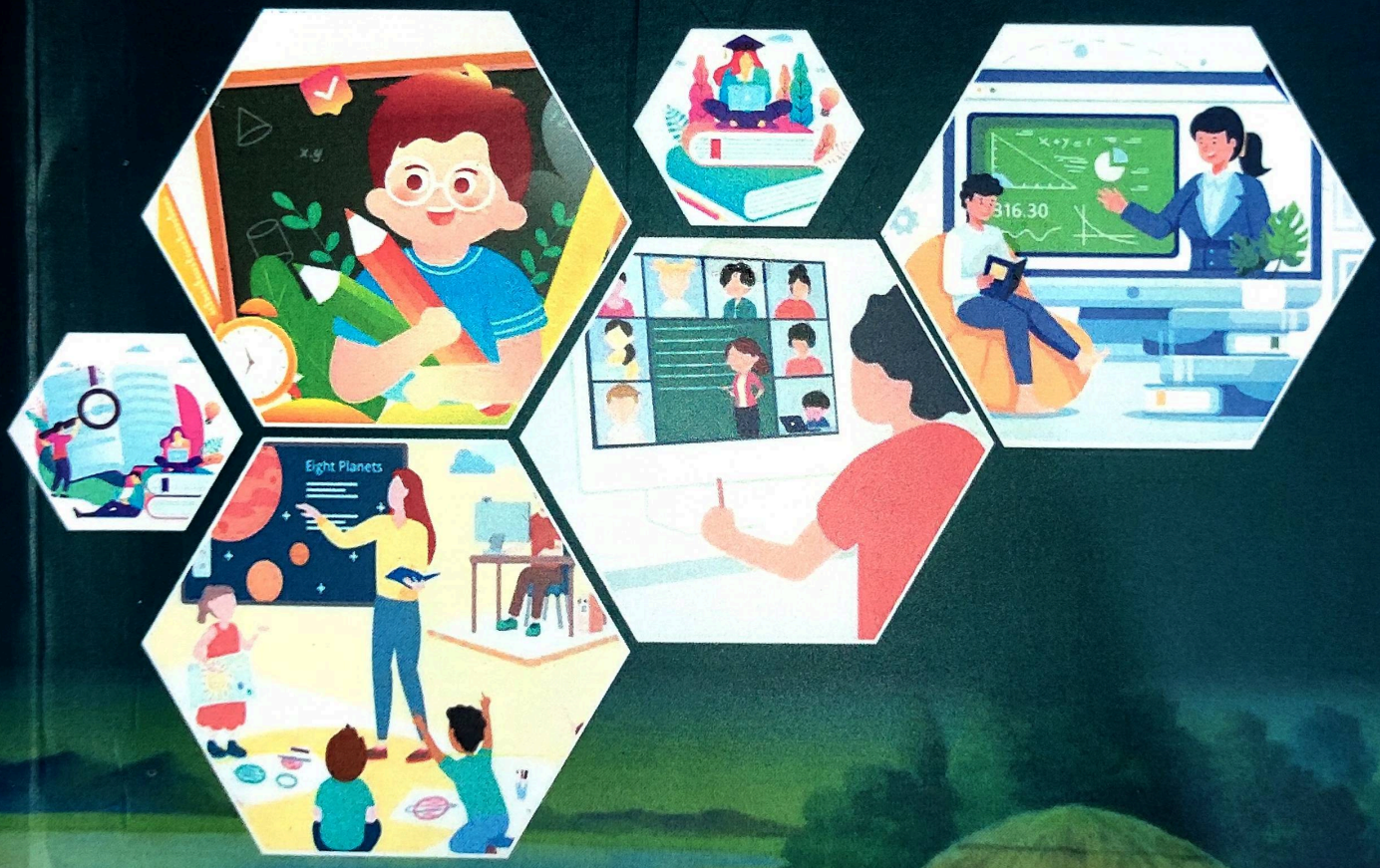

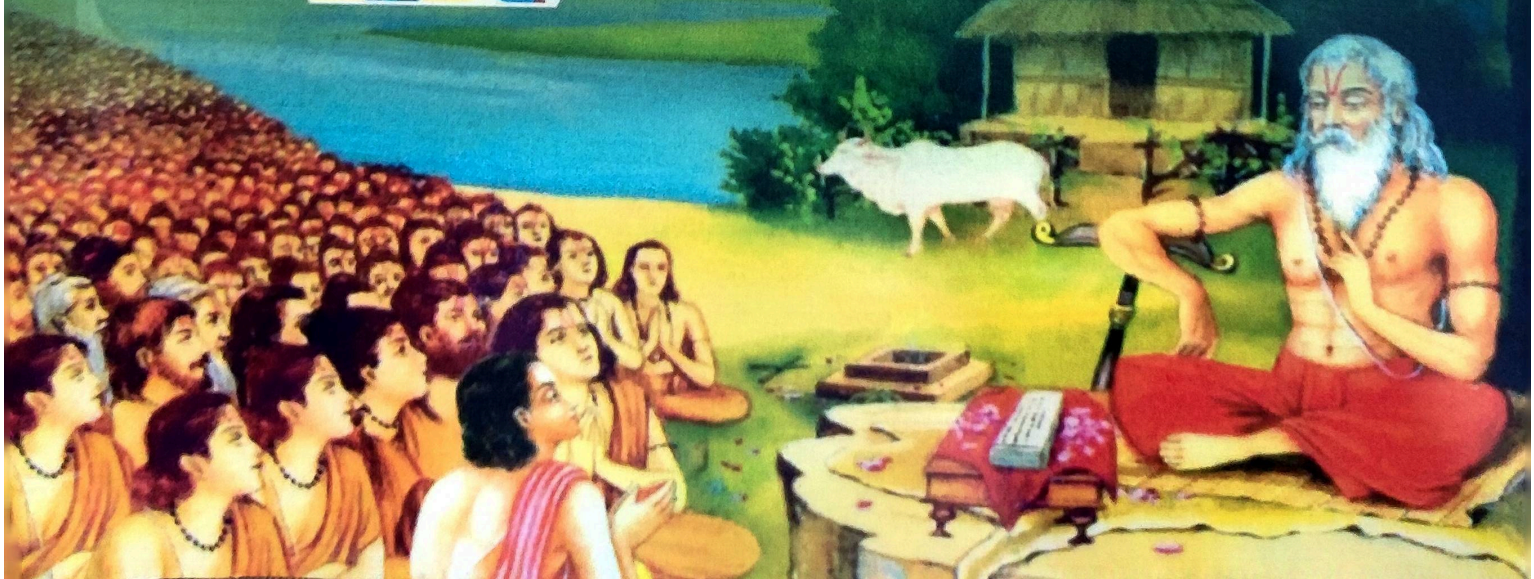

डॉ०भावना सिंह चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेरठ में असिस्टेंट प्रोफेसर बी०एड० विभाग में अध्यापनरत है। इन्होंने एम०एड०, एम०ए० (शिक्षाशास्त्र, प्राचीन भारतीय इतिहास), यू०जी०सी० (नेट), जे०आर०एफ० एवं एस०आर०एफ० छात्रवृत्ति के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद से डी०फिल० की उपाधि प्राप्त की है। 13 वर्ष का शिक्षण एवं शोध अनुभव भी है। इन्होंने 70 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार/कॉन्फ्रेंसो में शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया है एवं 30 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में लेख भी प्रकाशित हुए हैं। जिसमें से 16 शोध पत्र यू०जी०सी० लिस्टेड एवं यू०जी०सी० केयर लिस्टेड जर्नल एवं 20 सम्पादित पुस्तकों में अध्याय प्रकाशित है। दो राष्ट्रीय एवं पाँच अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त इसके अतिरिक्त पाँच पुस्तकें अनेक पाठ्य सामग्री एवं e-content भी निर्मित किए हैं।

ई०मेल०- bhavnasinghau@gmail.com

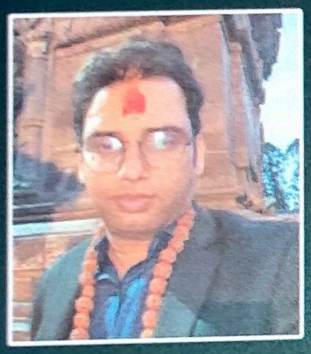

डॉ०अमित कुमार दूबे वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ०प्र० से शिक्षक-शिक्षा विभाग में पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की है। एम०ए० (मनोविज्ञान और अंग्रेजी) बी०एड०, एम०एड० (स्वर्ण पदक), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन योग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन की शिक्षा प्राप्त की है। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (शिक्षाशास्त्र) तथा विविध प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में आलेख व शोध पत्र प्रकाशित है। हिन्दी कल्चरल सेन्टर टोक्यो, जापान के सदस्य और नेपाल के प्रतिष्ठित संस्था द्वारा सम्मानित भी है। इन्होंने 40 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार/ कॉन्फ्रेंसो में शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया है एवं 30 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध-पत्र और लेख भी प्रकाशित हुए हैं। जिसमें से 14 शोध पत्र यू०जी०सी० लिस्टेड एवं यू०जी०सी० केयर लिस्टेड जर्नल एवं 16 सम्पादित पुस्तकों में अध्याय प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त 22 पुस्तकें और लगभग 10 पुस्तक त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमाण्डौ, नेपाल द्वारा प्रकाशित हुई है एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी निर्मित किए हैं। श्री राम सुहाग तिलक कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रशासनिक एवं शैक्षिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे है। शिक्षा, साहित्य, भाषा, संस्कृति एवं विविध विमर्श से सम्बंधित 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

ई.मेल-dramitkrdubey@gmail.com

MRP : 560 /-

Kalindi Prakashan
9140270320, 9453904139
kalindiprakashan@gmail.com

ISBN 978-81-96642-00-6

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन v

यूनिट-1: भारतीय शिक्षा का इतिहास

1. वैदिक शिक्षा प्रणाली 1
   डॉ. अनिता
2. वैदिक कालीन में गुरु-शिष्य परम्परा 8
   शिव कुमार पाण्डेय
3. वैदिक काल में गुरू-शिष्य परम्परा 12
   डॉ. संगीता बंजारा
4. भारतीय शिक्षा व्यवस्था 17
   डॉ. परीक्षित लायेक
5. बौद्ध कालीन शिक्षा 28
   अक्षता के ऐल
6. ज्ञान-धारा का उद्‌गम : तक्षशिला विश्वविद्यालय 33
   साक्षी शर्मा, एवं डॉ. राजीव कुमार
7. मध्यकालीन भारतीय शिक्षा-व्यवस्था, विशेषताएँ एवं दोष 40
   अनीस अहमद खान
8. Guru-Disciple Relationship in Vedic Period and Present Times 46
   Sant Lal Ravat
9. Vedic Education System: An Analysis 52
   Dr. Amrita Chaudhary

यूनिट-2: बिट्रिश शासन के प्रारम्भिक वर्षो में शिक्षा

10. 1813 के आज्ञापत्र के प्रावधान एवं प्राच्य पाश्चात्य विवाद 57
डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय

11. भारतीय शिक्षा आयोग-1882 (हण्टर कमीशन) 61
डॉ. रेणु सिंह

12. भारतीय विश्वविद्यालय आयोग (1902) 74
मिथलेश कुमार

13. राष्ट्रीय आंदोलन और शिक्षा की प्रगति: एक अध्ययन 80
डॉ. सुनील कुमार दुबे

यूनिट-3: बिट्रिश कालीन भारत के प्रमुख आयोग

14. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (1917-1919) 89
ऋचा सिंह

15. वर्धा-शिक्षा योजना (बेसिक शिक्षा) 94
डॉ. मनोज उपाध्याय

यूनिट-4: स्वतंत्र भारत में शिक्षा के प्रमुख आयोग

16. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 99
डॉ. संदीप कुमार पाण्डेय

17. Secondary Education Commission (1952-53) 103
Dr. Kavita Agarwal

18. National Policy on Education 1986 & POA 1992 114
Anuradha Chaudhary

19. An Evaluation of the National Curriculum Framework (NCF) 2005 and Its Impact on Teacher Education 120
Mr. Gaurav

यूनिट-5: स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास

20. भारतीय प्राथमिक शिक्षा का इतिहास और विकास : एक सिंहावलोकन 127
प्रमोद कुमार

21. स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विकास: एक अनुसंधान 138
डॉ. शशिकांत यादव

22. स्वतंत्र भारत में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा का विकास: एक व्यापक अध्ययन 146
पंकज कुमार

23. व्यावसायिक शिक्षा 152
डॉ. भुपेन्द्र कौर

यूनिट-6: समसामयिक भारत में शैक्षिक चुनौतियाँ

24. स्वतंत्र भारत मे भाषा की समस्या 159
सीमा रानी

25. सर्व शिक्षा अभियान 163
डॉ. राजीव कुमार चौहान

26. जनसंख्या शिक्षा : आवश्यकता एवं महत्व 168
सुशील कुमार

27. वर्तमान संदर्भ में दूरस्थ शिक्षा: एक व्यापक समीक्षा 182
परविंद कुमार वर्मा एवं डॉ. दिनेश सिंह

28. निपुण भारत मिशन के सन्दर्भ में वर्तमान प्राथमिक शिक्षा की प्रासंगिकता 190
बृजेश कुमार श्रीवास्तव

अध्याय
23

व्यावसायिक शिक्षा

डॉ. भुपेन्द्र कौर
शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0) भारत

सारांश

व्यक्ति को किसी कार्य या व्यवसाय से संबंधित प्राविधिक प्रशिक्षण प्रदान करती है, ताकि वह उस व्यवसाय के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सकें। विश्वकोष के अनुसार- "व्यापक रूप में व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत उस सब प्रकार की शिक्षा को सम्मिलित किया जा सकता है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है।" वह शिक्षा जो ज्ञानेन्द्रिय और कामेन्द्रिय के शिक्षण द्वारा बालक या व्यक्ति के कौशल में वृद्धि करके उसे शारीरिक, मानसिक एंव बौद्धिक रूप से इस तरह पूर्ण बनाती है कि बालक या व्यक्ति किसी प्रकार से समाज पर बोझ न हो सके, और जीपिकोपार्जन के साथ राष्ट्र में अपनी भागीदारी निभानी सुनिश्चित कर सके।

मुख्य शब्द- व्यावसायिक, जीपिकोपार्जन, प्रशिक्षण, परिषद, उन्मुखीकरण।

प्रस्तावना

व्यावसायिक शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसके द्वारा बच्चे को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाती है जिसे की वह अपना रोजगार एंव नौकरी प्राप्त करने हेतु उपयोग में ला सके। यह शिक्षा व्यावहारिक गुणों के विकास पर बल देती है। व्यावसायिक शिक्षा अधिगमकर्ता को आन्तरिक रूचि पर आधारित होने के कारण तकनीकी कौशल को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सीधे तकनीकी के एक ग्रुप में महारत हासिल करता है। वर्तमान समय में व्यावसायिक शिक्षा अनेक प्रकार के रोजगार क्षेत्रों में जैसे-स्वास्थ्य, बैक और वित्त कार्य, तकनीकी व्यापार, भ्रमण आदि अनेक क्षेत्रों की विविध पाठ्यक्रमों के द्वारा शिक्षार्थी को प्रदान किया जाने वाला विभिन्न कौशलों पर आधारित प्रशिक्षण हैं। देखा जाये तो आज के समय में प्रत्येक कम्पनी अपने यहाँ एक निपुण कर्मचारी को ही रोजगार प्रदान करने का अवसर देती है। व्यावसायिक शिक्षा शिक्षार्थी को एक विशेष प्रकार के क्षेत्र में सीखने में मदद करती है। यह शिक्षा उन छात्रों के लिए भी उपयोगी है जोकि अकादमिक

शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ है या पढाई में कमजोर है। हमारे देश भारत में रोजगार युवा वर्ग के लिए एक चिन्ता का विषय बनी हुई है, इसी को ध्यान में रख भारत में व्यावसायिक शिक्षा का उददेश्य छात्रों को रोजगार के लिए तैयार करना है। अर्थात यह शिक्षा कॉलेज एवं विश्वविद्यालय से अलग हट कर युवाओं के लिए सीखने का एक अलग ही मार्गप्रदान करती है। जिससे की युवा वर्ग किसी कौशल का ज्ञान प्राप्त करके व्यवसाय करने में निपुन हो सके। यह बाजार की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने में निपुण है और शिक्षा प्रणाली का एक अछूता अंग भी है।

जीवन का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उददेश्य है। ज्ञान और आचरण मिलकर शिक्षा को पूर्ण बनाते है। ज्ञान आचरण के अभाव में पूर्ण नही कहा जा सकता। ज्ञान अभ्यास के द्वारा आचरण का अंग बन सकता है, तभी वह पूर्णतया को उपलब्ध हो सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा की अवधारण- व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में जैसे- "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986" में प्रोग्रामआफ एक्सन द्वारा संगठनात्मक संरचनात्मक, स्त्रोत एंव सुविधाओं का विकास करने का सुझाव दिया गया। इसमें निम्न सुझाव दिये गये-

- व्यावसायिक शिक्षा के लिए मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा एक संयुक्त समिति बनायी जायेगी जो राष्ट्रीय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा की योजना नीति निर्धारण करेगी। इसके साथ ही मानव संसाधन एंव विकास मंत्रालय में एक केन्द्र भी स्थापित किया जायेगा।
- विकास अनुसंधान एवं मूल्यांकन संबंधी कार्यों पर निगरानी करने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं विकास प्रशिक्षण परिषद् के अर्न्तगत व्यावसायिक शिक्षा के लिए एक केन्द्रीय संस्थान की स्थापना की जायेगी।
- जैसे-राज्य व्यावसायिक शिक्षा परिषद्, राज्य व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना राज्य स्तर पर और समन्वयक संस्थाओं की स्थापना जिला स्तर पर की जायेगी जो अपनी आवश्यकताओं का निर्धारण करेगी।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद, व्यावसायिक शिक्षा का केन्द्रीय संस्थान, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं शिक्षण, क्षेत्रीय महाविद्यालय, तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान आदि को मजबूत बनाया जायेगा। जिससे वे व्यावसायिकरण के साधनों को जुटाकर अपनी अधूरी संरचना में सुधार करके अपने कार्य को सही और प्रभावी बना कर कुशलता से अपना कार्य सके।
- राज्य व्यावसायिक परिषद, जिलेवार समितियों का गठन करके करके सर्वेक्षण द्वारा शक्ति का अध्ययन करेंगे। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद, व्यावसायिक शिक्षा का केन्द्रीय संस्थान, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं शिक्षण, क्षेत्रीय महाविद्यालय, तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की सहायता एवं मार्गदर्शन करेगी और इन संस्थाओं की सहायता से क्षेत्र विशेष के विकास की योजनायें बनायेंगी।

- राज्य व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषदों में पाठयक्रम विकास केन्द्रों की स्थापना की जायेगी जहां व्यवसाय विशेष से संबंधित व्यावसायिक शिक्षा के पाठयक्रम विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए जायेंगें, जो उन संस्थानों को उपलब्ध करायेंगे जो उस प्रकार के विशिष्ट प्रशिक्षण हेतु बनायी गयी है। क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुसार वे उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का विकास करेंगे। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद आदर्श पाठयक्रमों एवं दिशा निर्देशों का विकास करेगी।
- इस क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था एंव उनको निर्देश देने हेतु उन्मुखीकरण कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, राज्य व्यावसायिक शिक्षा केन्द्रों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, तकनीकी शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित किए जायेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान और राज्य स्तर पर राज्य व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों के बीच समन्वय स्थापित किया जायेंगा।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जिला व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए जायेंगे जहां पर स्थापित किए जायेंगे वहां पर प्र्याप्त सुविधाएँ की जायेगी। जहां पर छात्रों को विभिन्न व्यवसायों की शिक्षा दी जायेगी। ऐसी संस्थाओं में उच्च कुशलता प्राप्त कुशल प्रशिक्षक रखे जायेगें समन्वित योजना के द्वारा इन सुविधाओं का और इा केन्द्रों पर संसाधनों का उपयोग कुछ स्कूल के शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के द्वारा किया जायेगा।

व्यावसायिक शिक्षा क्या है, यह शिक्षा स्कूल कॉलिज और विश्वविद्यालय से किस प्रकार अलग हैं- कॉलेज शिक्षा निश्चित समय और निश्चित क्षेत्र के अन्तरगत विभिन्न प्रकार के व्यवसायों पर लागू करके एक सैद्धान्तिक एंव व्यापक ज्ञान जानकारी प्रदान करती है। यह शिक्षा छात्रों को एक विशेष शिल्प, तकनीकी कौशल आदि के साथ-साथ खाना पकाना, सिलाई कढाई जैसे कौशल का ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। कॉलेज शिक्षा विभिन्न विषयों में पाठयक्रम उपलब्ध कराकर छात्रों को शिक्षा प्रदान करतें है, परन्तु वह शिक्षा अनेक बार स्नातक करने के बाद भी युवाओं के लिए किसी भी रोजगार में उपयोगी नही हो पाती है, वही दूसरी ओर व्यावसायिक शिक्षा स्कूल में होने वाले व्यापक शैक्षणिक अध्ययन को पूरा नही करती इसके बजाय वो सिर्फ विशिष्ट क्षेत्र या स्थिति के लिए प्रत्यक्ष ज्ञान और निर्देश प्रदान करती है।

प्रशिक्षण के द्वारा काम के लिए तैयार करना-व्यावसायिक शिक्षा स्नातक स्तर पर छात्रों को ''प्रशिक्षण के द्वारा काम के लिए तैयार करती है'' इसी के साथ यह व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान करती है इसको इसी के अनुरूप तैयार किया गया हैं, इसलिए इसमें छात्र विशेष कौशल प्राप्त करके अपने अनुसार रोजगार या पेशे का चुनाव करता हैं अपने अनुसार उद्योग का विकास करता है।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने से अनेक लाभ है। जैसे-

1. **इससे नौकरी प्राप्त करने के ज्यादा मौके होते है-** व्यावसायिक प्रशिक्षण कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करता है और व्यावहारिक कौशल सीखने के तरीके पर ध्यान देता है। अर्थात कार्यक्रम के पूरा होने तक छात्र ने व्यवसाय के विशिष्ट कार्यो को करने के लिए आवश्यक ज्ञान और व्यवहारिक कौशल प्राप्त कर लिया है। यह ज्ञान सैद्धांतिक ज्ञान की तुलना में अधिक जानकारी प्रदान करता है। इस प्रकार की शिक्षा के साथ अनेक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते है। जैसे-ऑटोमोटिव मैकेनिक, इलैक्ट्रीशियन, प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण, वेब डिजाइनर, आदि ऐसे अनेक कार्य है जो व्यवसायिक शिक्षा के अर्न्तगत सिखें जा सकतें है।
2. **वेतन ज्यादा है-** पढ़ाई के साथ छात्र अगर कोई व्यवसायिक कार्यक्रम में भागीदारी निभाते है तो उन्हें जो सीखने को मिलेगा उससे उन्हें वेतन बढोतरी में काफी प्रोत्साहन मिलेगा।
3. **कार्य में संतुष्टि प्राप्त होती हैं-** व्यावसायिक शिक्षा की विशेषता है कि इसे कक्षा शिक्षण के साथ छात्रों को उनकी रूचि एंव योग्यता के अनुसार व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं और प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं को उनके क्षेत्र की आवश्यकताओं को समझ कर पूरा किया जाता हैं।
4. **सम्पूर्ण जीवन कमाई का साधन-** व्यावसायिक शिक्षा को तकनीकी क्षेत्र और शिल्प के लिए तैयार किया गया है, क्योंकि इसमें हाथ से काम करने पर बल दिया गया है अर्थात इसे साधारण भाषा में गैर शैक्षणिक भी कहा जाता है, जैसे-प्लंबिग का काम, बेकरी का काम, मोटर मकेनिक, क्राफ्ट का काम, बुटिक का काम, फोटोग्राफी, पाक कला, इंटीरियर डिजाइन आदि को अपनाया गया हैं यह शिक्षा विशेष क्षेत्र में किए जाने वाले रोजगार के कौशल और कर्तव्यों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता हैं जो समाज के रोजमरा के काम के लिए जरूरी है, के लिए विशेष जानकारी प्रदान करता है। यह शिक्षा विचारों और सिद्धान्तों पर आधारित कौशल केन्द्रित शिक्षा है। इस शिक्षा में कैरियर के लिए अनेक व्यावसायिक कार्यक्रम मौजूद है। कंप्यूटर का कौशल प्राप्त करने के लिए युवा तकनीकी शिक्षा का रास्ता चुन सकते है। इससें छात्र कई आवश्यक रचनात्मक कौशल सीख कर जीवन में उनको उपयोगी बना सकते है।
5. **उद्योग के लिए कार्य कुशल कर्मी-** व्यावसायिक शिक्षा में तकनीकी, हथकरघा, शिल्प आदि हस्थकला जैसे कार्यो पर बल देकर व्यवसाय के लिए तैयार किया जाता है। इससे छात्र नौकरी न मिलने पर अपना कोई भी व्यवसाय शुरू कर सकते है।
6. **व्यक्तिगत उत्पादन क्षमता को बढ़ाना-** व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा हम कुछ नया सीखते है और अपने ज्ञान को बढाकर अपने उत्पादन में वृद्धि कर सकते है। इसके साथ ही अनेक बेरोजगार लोगों को रोजगार भी प्रदान कर सकते है क्योंकि इसमें हाथ से काम करने पर

बल दिया गया है जिससे मजदूर वर्ग के लोगों को आसानी से रोजगार प्रदान किया जा सकता है। उससे हमारी उत्पादकता में भी वृद्धि होगी, साथ ही लोगों को रोजगार भी प्राप्त होगा।

व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता उददेश्य एवं महत्व- शिक्षा रोजगार की प्राप्ति अर्थात धनोपार्जन का मार्ग प्रशस्त करने का मुख्य माध्यम है। ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र, परिवार सम्पन्न हो या निर्धान, वर्तमान समय में प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करना चाहतें कि बच्चें का भविष्य सभल जायें। माता-पिता चाहते है कि उन्के बच्चे ऐसी शिक्षा ग्रहण करे जिससे उन्हें भविश्य में सम्मानपूर्वक और अधिक आमदनी वाली जीविका प्राप्त हों। इसी को देखते हुए आज का युवा भी शिक्षा ग्रहण करने का यही लक्ष्य रखता है कि वो जो शिक्षा ग्रहण करे वह श्रेष्ठ हो, अब प्रश्न उठता है कि आज देश में शिक्षा की जितनी भी प्रणालियाँ हैं क्या वो सब रोजगार परक है? क्या शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त युवाओं को संबंधित क्षेत्र में स्तरीय रोजगार उपलब्ध हो रहे हैं? या शिक्षा की जो महत्वपूर्ण विधायें है वो क्या सम्पन्न परिवार तक ही सीमित है? क्या शिक्षा प्रणाली विशाल मानव संसाधन एवं प्राकृतिक संसाधनों के दोहन हेतु देश की मांग के अनुरूप जनशक्ति तैयार हो रही है या नही? ऐसे अनेक प्रश्न है जिनके प्रति उत्तरों का औसत, विद्यमान शिक्षा प्रणाली को विकास प्रक्रिया के प्रतिकूल ठहराता है।

निम्न स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा प्रणली पर अन्वेषणात्मक दष्टि डालने से स्पस्ट होता है कि प्रत्येक स्तर पर पढाये जाने वाले पाठ्यक्रम यदि तकनीकी, अभियांत्रिकी, चिकित्सा एवं सेना तो कुछ सीमित क्षेत्रों को छोड दो तो लगभग 60 से 80 प्रतिशत तक और कुछ दशकों में शत प्रतिशत से पूरी तरह सैद्धान्तिक है, जबकि इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के माध्यम से तैयार होने वाले देश को बहुत कम आवश्यक होने वाले शिक्षितों की देश को बहुत जरूरत है और ऐसे शिक्षितों को केवल सरकारी/निजी क्षेत्रों में न्यूनतम रूप् से उपलब्ध वेतन रोजगारों में खपाया जा सकता है क्योंकि इनके पास किसी कार्य को करने का व्याव्सायिक/तकनीकी कौशल नहीं होता। दूसरे शब्दों में विद्यमान शिक्षा प्रणाली के अधिकाशं पाठ्यक्रम युवाओं को सिर्फ "व्हाइट कालर जॉब" के लिए तैयार कर रहे हैं। देश की अर्थ व्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों के कारण जशक्ति की जो श्रम-बाजार में मांग बन रही है तथा जिस तरह के रोजगार के अवसर उभरकर सामने आ रहे है उससे विद्यमान शिक्षा प्रणाली मेल नही खाती है।

आर्थिक क्षेत्र में किए गये विभिन्न शोध अध्ययन इंगित करते हैं कि अगली सदी के प्रारंम्भ में अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का येगदान सत्तर से घटकर बीस प्रतिशत रह जायेगा तथा उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का योगदान 30 से 60 प्रतिशत तक होगा जबकि 60 से 70 प्रतिशत जनसंख्या वर्तमान समय में जीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है, इसके साथ ही जनसंख्या बढोतरी के कारण रोजगार प्राप्त करने के लिए करोडों हाथों में से 85 प्रतिशत को अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्रों में खपाया जा सकेगा, क्योकि संगठित क्षेत्रों में मात्र 10 से 15 प्रतिशत के लिए

ही रोजगार उपलब्ध होंगे। अतः शिक्षाविदों और योजनाकारों ने स्वीकार किया कि शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने के लिए अनुभव/कौशल आधारित तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को शिक्षा का मूल अंग बनाना होगा ताकि विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम से किसी एक व्यवसाय में व्यावसायिक एवं उद्यमीय कुशलता अर्जित करके उससे संबंधित उत्पादक या सेवा प्रकृति के स्वरोजगारों को सफलतापूर्वक स्थापित एवं संचालित कर सके, नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में अधिक से अधिक युवाओं को मध्य स्तरीय रोजगार के लिए तैयार करने तथा श्रम बाजार में मांग तथा आपूर्ति के बीच व्यापक विषमताओं को दूर करने के उददेश्य से व्यावसायिक शिक्षा के विकास पर अधिक बल दिया गया।

व्यावसायिक शिक्षा का विकास- स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश में व्याप्त निरक्षरता, निर्धनता, विषमता, बेरोजगारी एवं पिछडेपन को दूर करने तथा राष्ट्र के विकास के उच्चतम् शिखर पर पहुंचाने के लिए अर्थवेत्ताओं एवं शिक्षाविदों ने प्रारम्भ से ही स्वाबलम्बन पर आधारित व्यावहारिक शिक्षा के विकास पर बल दिया। क्योकि महात्मा गांधी जी जैसे दार्शनिक जानते थे कि आर्थिक विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति रोजगार मूलक शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। परन्तु आर्थिक प्रक्रिया एवं शिक्षा प्रणाली की दिशा का मूल्यांकन बताता है कि शिक्षा प्रणाली जिसे रोजगार मूलक और आर्थिक विकास की सहगामिनी होना चाहिए वह कमोवेश उससें विमुख हो रही है। परिणामतः आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, निर्धनता जैसी गंभीर समस्याओं को उन्मूलन में हमारे प्रयत्नों की सफलता का पैमाना अन्य देशों के मुकाबले काफी नीचे आता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् 1976 द्वारा तैयार कार्यक्रम जिसका शीर्षक "उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और इसका व्यावसायिकरण" 1976 में देश के सामने एक आदर्श ढाँचा व्यावसायिक शिक्षा का पूरे देश में लागू करने के लिए रखा। 1976 में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम लागू किया गया, उस समय से यह कार्यक्रम अनेक राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लागू किया जा चुका है। 1985 में में लगभग 120 विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक पाठ्यक्रम जो कृषि, नृत्य कला, वाणिज्य, गृह विज्ञान, चिकित्सा शिक्षा, हस्त कला, तकनीकी शिक्षा आदि विषयें से जाडते था। इसे 12 कक्षा के स्तर पर देश की लगभग 2000 संस्थाओं में लागू किया गया जिससे पूरे देश की लगभग 2.5 प्रतिशत छात्रों को शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ।

व्यावसायिक शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य-वर्तमान समय में देश कीं शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा 12 कक्षा स्तर और स्नातक स्तर पर पूरे देश के लगभग सभी विद्यालयों/संस्थओं में सेचालित है और लगभग 150 पाठ्यक्रम इसके अंतर्गत पढाये जा रहे है। व्यावसायिक शिक्षा को रोजगार परक एवं अर्थव्यवस्था के अनुसार बनाने के उददेश्य से प्रत्येक पाठ्यक्रम की संरचना में मुख्य रूप से प्रायोगिक परीक्षण पर अधिक बल दिया जाता है। अर्थात शिक्षण के कुल समय में से लगभग 50 से 75 प्रतिशत का समय छात्रों के लक्ष्य के आधार पर पाठ्यक्रम के अनुसार किसी कार्य को कुशलतापूर्वक करने की दक्षता के आधार पर किया जाता है। ताकि वो शिक्षा पूरी

करके कार्य जगत में उपलब्ध कार्यो में लगकर अपनी जीविका प्राप्त कर सकें उन्हें रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

वसायिक शिक्षा के द्वारा सीमित आय या कम वजट के लोगों को भी अनेक लाभ प्राप्त हो हो सकते है। जिन्हें अपनी जरूरतों को पूरा कारने के लिए शैक्षिक लचीलेपन की आवश्यकता है। इसके लिए यह शिक्षा कम समय में अच्छे भुगतान की जरूरत को पूरा करती है। यह शिक्षा दूसरी शिक्षा के मुकाबलें में अधिक फायदे की होने के साथ-साथ इसका एक लाभ व्यस्कों के लिए यह भी है कि वो इसे आसानी से पूरा कर सकते है, उन्हे सिर्फ अपने रोजगार के साथ इसे सन्तुलित करने की आवश्यकता हैं, व्यावसायिक शिक्षा की उपयोगिता के द्वारा ही केरियर में परिवर्तन होता है, कोई भी स्नातक की पढाई की लागत के कम अंश के साथ व्यावसायिक उसके इस प्रकार व्यावसायिक प्रशिक्षण कम समय में अच्छे भुगतान वाली स्थिति पैदा करता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आनंद अमित (2008)- शिक्षा एंव वर्तमान भारत वर्ष, क्रान्तिसूत्र, (त्रिमासिक पत्रिका) मार्च-जून, जम्मू, वर्ष-2, अंक-1 पृ. 12-13।
2. गुप्ता, एस.पी. (1998)-भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, 11 इलाहबाद-2।
3. गुप्ता, नेगीराम (1985)-व्यावहारिक साक्षरता आर्य बुक डिपो नई छिल्ली पृ. 36
4. गुरूजी (2004)- भारतीय समाज को समझना, म.प्र. भे. मु.वि.वि.।
5. पाठक. पी.डी. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, छत्तीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा।
6. पाठक. पी.डी. (2007) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवॉ संस्करण, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा।
7. पाण्डेय, के.पी. (1992) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा।
8. पाण्डेय, के.पी. (2005) नवीन शिक्षा दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।